International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 963-968 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

विद्यार्थी के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिवेश का प्रभाव : एक अध्ययन

शोधार्थी जमीला खांन

शिक्षाशास्त्र विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

डॉ. यूसुफ सलीम

सह प्राध्यापक

शिक्षाशास्त्र विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

शोध सारांश

सृष्टि संचालन के नियमों के अनुसार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन होते रहना एक स्वाभाविक बात है मानव जीवन सदैव एक सा नही रहता आज उतार है तो कल चढ़ाव एकाकी विचार प्रेरित मनुष्य इस नियति के विधान को नहीं समझ पाता। वह अपनी इच्छा के अनुकूल परिस्थितियों में ही सुख का अनुभव करता है तथा विपरीत परिस्थितियों में दुखी हो जाता है। आग की भयानक गोद में पिघलकर लोहा सांचे में ढलने योग्य बनता है। मनुष्य भी कठिनाइयों में तपकर उत्कृष्ट, सौंदर्य युक्त, प्रभावशाली और महत्वपूर्ण स्थान पाता है।

संकेत शब्द (Key Words)– व्यक्तित्व, विकास, आयाम, संस्कृति

व्यक्तित्व के विकास में सूरत एवं सीरत दोनों की अहम् भूमिका होती है। व्यक्तित्व का विकास पारिवारिक, सामाजिक कार्यों में प्रतिबिंब होता है। भारतीय धर्मानुयायी का विवाह विधान दो आत्माओं को वेल्डिंग की तरह जोड़ने वाले यज्ञ कृत्य के साथ ही संपन्न होता है। पार्थिव शरीर की पूर्णाहति चिता जलाकर अंत्येष्टि यज्ञ से प्रतीत होता है कि भारतीय जीवन चर्चा में यज्ञ को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। व्यक्तित्व का अभिप्राय किसी व्यक्ति की शारीरिक सुंदरता,ख्याति अथवा प्रमाण से होता है[1] उदा. अमुक व्यक्ति का कोई व्यक्तित्व नही है तब हमारा अभिप्राय यह बताना ही समझा जाता है कि व्यक्ति देखने में बिल्कुल भी आकर्षक नही है। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को व्यक्ति के पर्यावरण, वंशानुक्रम अथवा इन दोनो के मिश्रण के आधार पर ही बताया है। व्यक्तित्व मनुष्य का आंतरिक गुण है, वह नही जो उसकी शारीरिक रचना में स्पष्ट होता है। कुछ व्यक्तियों के लिए विचार, धारणाएं, चिन्तन, योग्यता और मनोवृत्तियां बहुत कम लोकप्रिय हो सकती है। ऊपर से अच्छा दिखाई देने के बाद भी ऐसे व्यक्तियों का व्यक्तित्व उच्च नहीं कहा जा सकता।

सामाजिक ज्ञान में वृद्धि होने के साथ ही यह महसूस किया जाने लगा कि व्यक्ति की आकृति नही बल्कि उसके सामाजिक और सांस्कृतिक गुण ही व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। मानव व्यक्तित्व का अध्ययन वास्तव में उसकी शारीरिक संरचना, संस्कृति और समाज द्वारा प्रभावित संपूर्ण जीवनचक्र का अध्ययन है।

"मनुष्य के पास व्यक्तित्व नही होता वह स्वयं एक व्यक्तित्व है" व्यक्ति के अधिकांश व्यवहार उसकी विभिन्न मनोवृत्तियों से ही प्रभावित होते है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का मनोवृत्ति निर्माण से एक घनिष्ठ संबंध है। इसका कारण यह है कि व्यक्ति के बहुत से व्यवहार तथा उसकी मनोवृत्तियां व्यक्तित्व संबंधी गुणों से ही प्रभावित होती है। समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान व्यक्तित्व में कुछ ऐसे गुणों का विकास होता है जो व्यक्ति में कुछ विशेष मनोवृत्तियां विकसित करते हैं। उदाहरण – बचपन से ही बच्चे में जिस तरह के व्यक्तित्व का निर्माण होने लगता है उसी के अनुरुप विभिन्न तथ्यों के प्रति उसमें कुछ विशेष मनोवृत्तियों का निर्माण होना आरंभ हो जाता है।

संस्कृति तथा मनोवृत्ति निर्माण मनोवृत्तियों का संबंध सीखे हुए व्यवहारों से होने के कारण यह अर्जित होती है और इसलिए इनके निर्माण में संस्कृति की एक महत्वपूर्ण भूमिका स्वीकार की जाती है। व्यावहारिक रूप से भी यह देखा जा सकता है कि जिस समाज की जैसी संस्कृति होती है उसी के अनुरूप व्यक्ति की मनोवृत्तियों का निर्माण होने लगता है। प्रत्येक समाज की संस्कति एक दसरे से कछ भिन्न होती है। इसी कारण अलग–अलग संस्कृतियों में रहने वाले लोगों की मनोवृत्तियां भी अलग–अलग होती है।

व्यक्तित्व का प्रकार भी मनोवृत्तियों के निर्माण को प्रभावित करता है। यदि किसी व्यक्ति का मनोवृत्तियों का निर्माण और विकास जहाँ एक ओर व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं से संबंधित है, वही अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक तथा व्यक्तित्व संबंधी कारण भी इन्हें प्रभावित करते हैं।

व्यक्तित्व का विकास

जन्म के समय बच्चे में कोई अहम् (Ego) नही होता। इस समय वह अनेक अनुक्रियाओं और इच्छाओं का एक पुतला मात्र होता है। इस अवस्था को फ्रायड ने मानव की अद अवस्था (Idstage) कहा। बच्चा जैसे जैसे बड़ा होता है वह परिवार में माता–पिता और अन्य सदस्यों के सात अन्तक्रियाएं करता हआ विभिन्न सामाजिक अनक्रियाओं को सीखने लगता है। साथ ही वह उन मूल्यों को भी आत्मसात करने लगता है जिन्हें परिवार के सदस्यों द्वारा महत्वपूर्ण समझा जाता है। वकास की प्रथम अवस्था में बच्चा अपने आसपास के लोगों के बीच कोई अन्तर नही करता उसकी दृष्टि में सभी लोग समान होते हैं।

व्यक्ति के विकास के इस स्तर पर बच्चा अपने माता–पिता से –इसलिए प्यार करता है क्योंकि वे उसे सुरक्षा और सुख प्रदान करते हैं।

संस्कृति

संस्कृति एक ऐसा सीखा हुआ व्यवहार है जो परम्परा के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित होता रहता है। संस्कृति का कोई पक्षपात चाहे भौतिक हो अथवा अभौतिक इससे संबंधित प्रत्येक तत्व मनुष्य की किसी न किसी आवश्यकता को पूरा करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी संस्कृति को अपने लिए आदर्श मानकर उससे अनुकूलन करने का प्रयत्न करता रहता है।[2] संस्कृति और व्यक्तित्व का पारस्परिक संबंध सदैव ही लेन–देन का रहा है और आगे भी सदा ही लेन–देन का रहेगा. संस्कृति ही मनुष्य को (Ruth Benedict) व्यक्तित्व की दिशा निर्धारित करती है। संस्कृति मानव की सामाजिक विरासत (Social heritage) है और व्यक्ति के व्यक्तित्व को समाज का उपहार जो उसे समाज के सदस्य के नाते प्राप्त होता है।

सद्बुद्धि का जागरण ही नया सबेरा है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है उसके बावजूद भी वर्तमान समय में निम्न से निम्नतर समयाभाव संस्कृति की ओर जा रहा है जो कि व्यक्ति को पतन की ओर ले जा रहा है। जबकि मनुष्य विवेकशील प्राणी होने के नाते उन्नत

सभ्यता एवं संस्कृति की ओर उन्मुख होकर एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए संस्कृति एवं व्यक्तित्व पर एक लेख तैयार किया गया है। सदबुद्धि का जागरण ही ईश्वरीय शक्ति का जागरण है आत्म सुधार ही विश्व सुधार का आधार है।

व्यक्ति अपने साथ न्याय चाहता है तो उसे औरों के साथ स्वयं भी. न्याय का व्यवहार करना होगा। प्रकृति में सभी प्राणियों का अन्योन्याश्रित संबंध है सभी एक दूसरे के सुख–दुख को प्रभावित करते हैं। संस्कृति वह सुक्ष्म प्रेरक तत्व है जो व्यक्ति के व्यवहार को प्रेरित करती है। व्यक्ति के व्यवहार को प्रत्येक समय डंडे से नियंत्रित नही किया जा सकता। सुख दुख का संबंध व्यक्ति की सोंच और उसके प्रत्यक्ष व्यवहार से ही होता है। भारतीय संस्कृति में खानपान और लोक व्यवहार की परंपराओं द्वारा उसे ही श्रेष्ठ बनाने के प्रयास संपन्न होते रहते हैं।

हमारा सांस्कृतिक आदर्श है आत्मवत् सर्वभुतेषु अर्थात् सभी को अपना और अपने अंग अवयव जैसा आत्मवत् अनुभव किया जाय यही श्रेष्ठ व्यवहार का मापदण्ड है। इस भवन के प्रत्यक्ष क्रियान्वयन का आधार है संयम, सहिष्णुता, सहकार्य, सहायता सेवा और कर्तव्यपरायणता जैसे सद्गुण श्रेष्ठ गुणों की व्यक्ति के अंतकरण में दृढ़तापूर्वक स्थापित कर देना यही भारतीय संस्कृति की विशेषता।

समाजीकरण

समाजीकरण की सम्पूर्ण प्रकिया का उद्देश्य एक विशेष संस्कृति के अनुसार व्यक्तित्व का समुचित रूप से निर्माण और विकास करना होता है। समाजीकरण के सभी अभिकरण प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से व्यक्तित्व के निर्माण में ही योगदान करते है। व्यक्तित्व के निर्माण में जीवन रचना केवल एक कच्चे माल की तरह है जबकि व्यक्तित्व के वास्तविक स्वरूप का निर्धारण सामाजिक–सांस्कृतिक विशेषताओं के द्वार ही होता है। संस्कृति का अर्थ होता है . परिष्कृत इस प्रकार संस्कृति का संबंध उन सभी तत्वों की समग्रता से है जो समूह में व्यक्ति का परिष्कार कर सके। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी बनने के लिए सीख की प्रक्रिया के द्वारा बहुत सी विशेषताओं और गुणों को ग्रहण करता है। उन सभी की संपूर्णता का नाम संस्कृति है।

संस्कृति शिष्टाचार के दंगों अथवा विनम्रता मात्र से ही नही है बल्कि संस्कृति एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें हम जीवन के प्रतिमानों, व्यवहारों के तरीकों, बहुत से भौतिक और अभौतिक प्रतीकों, परम्पराओं, विचारों सामाजिक मूल्यों, मानवीय क्रियाओं और आविष्कारों को सम्मिलित करते हैं।[3] संस्कृति वह जटिल समग्रता है जिसके अंतर्गत ज्ञान, विश्वास कला, आचार, कानून प्रथा तथा इसी प्रकार की उन सभी क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है जिन्हें मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है। टायलर ने संस्कृति के अभौतिक पक्ष को सम्मिलित करते हुए मानव की सामाजिक विरासत के रूप में स्पष्ट किया है।

संस्कृति तथा व्यक्तित्व का पारस्परिक संबंध

समाज मनुष्य को पशु जीवन से अवश्य अलग करता है लेकिन इस बात का निर्धारण संस्कृति ही करती है। जन्म के समय बच्चा एक कच्चे माल की तरह होता है तथा वह जिस सांस्कृतिक परिवेश में जन्म लेता है उसी के अनुसार संस्कृति उसके अनुभवों और व्यवहारों को प्रभावित करना आरंभ कर देता है। संस्कृति ही व्यक्तित्व की वास्तविक अभिव्यक्ति है।

समाज के सदस्यों का व्यक्तित्व किस प्रकार का बनेगा यह बहुत कुछ वहाँ की सांस्कृतिक विशेषताओं पर ही निर्भर होता है। व्यक्तित्व और संस्कृति के संबंध को देखने से पहले एक बार यह स्पष्ट कर लेना आवश्यक है कि व्यत्तित्व के अंदर हम किन–किन गुणों का समावेश करते हैं।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 963-968 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

व्यक्तित्व का संबंध व्यक्ति के उन सभी विचारों, मनोवृत्तियों, आदतों, व्यवहारों और मूल्यों से है जो उसके दैनिक जीवन और क्रियाओं में स्पष्ट होते हैं। व्यक्ति सामाजिक अन्तःक्रियाओं के माध्यम से जिन परंम्पराओं,कार्यविधियों और व्यवहार प्रतिमानों का अंगीकरण करता है उन्हीं के आधार पर उसके व्यक्तित्व को समझा जा सकता है। **उत्तरदायित्व की भावना, नैतिकता का स्वरूप**

कष्ट सहने की क्षमता, सम्मान प्रदर्शन, मनोवृत्तियों का निर्माण, व्यवहार प्रतिमानों का निर्धारण, पालन पोषण तथा प्रशिक्षण, समाजीकरण एक बच्चे द्वारा की जाने वाली, सामाजिक अनुकुलन की प्रक्रिया (Process of adaptation) से है। इन्केल्स (Inkwles) तथा अनेक समाजशास्त्रियों ने समाजीकरण के अंतर्गत व्यक्तित्व के विकास की अपेक्षा संस्कृति की सीख को अधिक महत्वपूर्ण माना है। व्यक्ति की अपेक्षा समाज अथवा सामाजिक समूहों को अधिक महत्व प्रदान करती है। किसी विशेष संस्कृति की प्रथाओं, आदतों, जनरीतियों तथा लोकाचारों को सीखने की प्रक्रिया ही समाजीकरण है। समाजीकरण का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

प्रभावित कारक

व्यक्तित्व के विकास के इस स्तर पर बच्चा अपने माता–पिता से इसलिए प्यार करता है क्योंकि उसे सुरक्षा और सुख प्रदान करते हैं। इस स्तर पर बच्चे के अंदर मैं अथवा इद् की भावना ही प्रबल होती है लेकिन माता पिता द्वारा जब अपने बच्चे को अपने संबंधों तथा वास्तविक परिस्थितियों के बीच समझौता या संतुलन स्थापित करना सीखाया जाता है तब बच्चे मे अहम् का विकास होना आरंभ हो जाता है।

व्यक्ति में अहम् और पराअहम् पर्याप्त मात्रा में विकसित होकर उसके इद् संबंधों संवेगों पर नियंत्रण लागू करके व्यक्तित्व का विकास करते हैं।

व्यक्तित्व के सांस्कृतिक कारक

भौतिक तथा अभौतिक क्षेत्र में सांस्कृतिक कारकों की कोई निश्चित सूची नही बनायी जा सकी लेकिन व्यक्तित्व पर बहुमुखी प्रभाव डालने में जिन सांस्कृतिक कारकों का प्रमुख योगदान होता है –

(1) परंपराए (2) प्रथाए (3) लोकाचार (4) नैतिकता तथा धर्म (5) संस्थाए (6) पालन पोषण तथा प्रशिक्षण के तरीके (7) भाषा (8) विज्ञान।

संस्कृति तथा व्यक्तित्व का पारस्परिक संबंध

यूटर और हार्ट समाज मनुष्य को पशु जीवन से अवश्य अलग करता है लेकिन इस बात का निर्धारण संस्कृति ही करती है जन्म के समय बच्चा एक कच्चे माल की तरह होता है तथा वह जिस सांस्कृतिक परिवेश में जन्म लेता है उसी के अनुसार संस्कृति उसके अनुभवों और व्यवहारों को प्रभावित करना आरंभ कर देती है। संस्कृति ही व्यक्तित्व की वास्तविक अभिव्यक्ति है।

परिवर्तन संसार का स्वाभाविक गुण है संसार कीशोभा ऋतु परिवर्तन, रात–दिन की तरह परिवर्तनशील है हर परिवर्तन एक नवीन जिंदगी लेकर आता है। ग्रीष्म के बाद बरसात एक नए सुख का संचार करती है। बचपन, जवानी, बुढ़ापे के रूप में मनुष्य का जीवन परिवर्तनशील है परिवर्तन जीवन का चिन्ह है।

सामाजिक व्यवस्था पर समाज का अधिकार है राजा (शासन या सरकार) का अधिकार नहीं। अतः समाज के नियम बनाना राजा का कर्तव्य नही है। विवाह, व्यापार, जीविका, सन्तानोत्पत्ति, वर्णाश्रम धर्म का पालन आदि प्रजा के धर्म है।

आज व्यक्ति अपने लाभ की बात ही सोचता है और उसका लाभ इसी में है कि पहले वह संभावित हानि को रोके, उसके बाद अधिक लाभ के लिए प्रयास

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 963-968 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

करे। अंग्रेजों ने अपने राजनैतिक आर्थिक लाभ के लिए भारत पर प्रभत्व जमाने का यही तरीका ढंढा था कि किसी भी प्रकार लोगों के आत्मविश्वास और आत्मगौरव को नष्ट करके उनकी मानसिकता को गुलाम बना लिया जाये। आज हमारी वेशभूषा बदल ही चुकी है और वैचारिक दृष्टिकोण भी तेजी से बदल रहा है। माता पिता भी अपने आपको मम्मी और डैडी कहलाना पसंद करते हैं। आज के प्रचलित वस्त्र और खानपान की वस्तुएं अधिकतर स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक है। खड़े खड़े भोजन करना, खड़े–खड़े पेशाब करना शौच की कमोड शैली, रात तक जागना, सबेरे तक सोना, बिना मुँह धोए स्वास्थ्य के लिए हानिकारक पेय चाय पीना, जूते चप्पल पहिन कर घर में घुस जाना, आपसी अभिवादन के लिए हाथ मिलाना आदि पश्चिमी संस्कृति के चाल चलन सामान्य व्यवहार बन चुके हैं और धीरे–धीरे अपने सामाजिक व्यवहार की विज्ञान सम्मत परंपराओं को भूलने लगे हैं। इससे मन और बुद्धि दोनों विकृत होते जा रहे है।

आपदाओं की जिस भयावह काली छाया में समाज दिख रहा है इस वृक्ष की अनेकों मजबूत शाखाएं फलती फूलती दिखाई दे भी रही है। किन्तु इसका मूल एक ही है और वह है व्यक्ति मनुष्य अपने व्यवहार से समाज और संस्कृति को बना रहा है व्यक्ति के आज सांस्कृतिक पतन से ही समाज में दुख और मुसीबतें बढ़ रही है यदि कोई उज्जवल भविष्य के बारे में चिंतन करता है तो उसे भारतीय संस्कृति के संरक्षण पोषण के लिए पूरी गंभीरता से प्रयास करने होंगे।

संस्कारों की शक्ति व्यक्ति के व्यवहार में पवित्रता का संचार करती है दैनिक क्रियाएं खानपान, अध्ययन, कला, मनोरंजन, पारिवारिक सामाजिक क्रियाकलाप अर्थात जीवन के हर क्षेत्र में मान्यताओं को रेखांकित करती है।

टी.वी. पर एक नृत्यांगना का साक्षात्कार चल रहा था। आंखों में गहरा काजल और सिर से पैर तक नृत्य की वेशभूषा में नर्तकी बड़ी गंभीरतापूर्वक अपनी क्रियाओं को समझा रही थी। जब भी हम किसी नृत्य को शुरू करते हैं तो सबसे पहले धरती को छूते है श्रद्धा से धरती माता को नमन करते हैं जो कि हम सबको सहारा दिये है और जो हमारा पालन पोषण करती है हम सोचते हैं कि जिस पर बार– बार पैर पटक कर हम नाच रहे है,[4] वह हमारी माँ है तो हमारा यह फर्ज है कि हम उसे नमन करें यही तो हमारी संस्कृति है। यह कोई समाज सेवक नही एक नर्तकी बोल रही थी।

सांस्कृतिक हमले को पहचानिये

आज व्यक्ति अपने लाभ की बात ही सोचता है और उसका लाभ इसी मे है कि पहले वह संभावित हानि को रोके, तब और अधिक लाभ के लिए प्रयास करे। आज हमारी वेशभूषा बदल ही चुकी है और वैचारिक दृष्टिकोण भी तेजी से बदल रहा है। यह सब कुछ ऐसे ही नहीं हो रहा है लोगों के मत बदलने के लिए बड़े पैमाने पर विदेशी धन भी आ रहा है। फिल्मों, साहित्य, चैनल, फैशन, विज्ञापन, सौंदर्य प्रतियोगिताएं नाम प्रसिद्ध कलाकारों और खिलाड़ियों आदि से आर्थिक अनुबंध के आधार पर तथा सरकारो और नेताओ को प्रभाव मे लेकर ही यह सब किया जा रहा है जिनसे सचेत रहने की आवश्कता है। आपदाओं की जिस भयावह काली छाया में समाज दिख रहा है इस वृक्ष की अनेकों मजबूत शाखाएं फलती– फूलती दिखाई दे भी रही है। किन्तु इसका मूल एक ही है और वह है व्यक्ति और उसका आचरण जिस प्रमाण में बड़ा कार्य करने का लक्ष्य है तो उसी प्रमाण में व्यक्ति के विचार और आचरण भी शुद्ध होते जाना चाहिए अहंकार का त्याग निश्छल और निःस्वार्थव्यवहार पहली शर्त है।

"बिना संस्कार नही सहकार और बिना सहकार नही उद्धार उज्जवल भविष्य प्रति विश्वास बना रहे इसके लिए अपनी रीति नीति आप स्वयं बनाए।"

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 963-968 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

सृष्टि संचालन के नियमों के अनुसार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन होते रहना एक स्वाभाविक बात है मानव जीवन सदैव एक सा नही रहता आज उतार है तो कल चढ़ाव एकाकी विचार प्रेरित मनुष्य इस नियति के विधान को नही समझ पाता। वह अपनी इच्छा के अनुकूल परिस्थितियों में ही सुख का अनुभव करता है तथा विपरीत परिस्थितियों में दुखी हो जाता है। आग की भयानक गोद में पिघलकर लोहा सांचे में ढलने योग्य बनता है। मनुष्य भी कठिनाइयों में तपकर उत्कृष्ठ, सौंदर्य युक्त, प्रभावशाली और महत्वपूर्ण स्थान पाता है। कठिनाइयां मनुष्य के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कठिनाइयों में खेलने से इच्छा शक्ति प्रबल रहती है। कठिनाइयों में ही जीवन दर्शन की परीक्षा होती है।

❖ शोधार्थी समाजशास्त्र, जीवाजी वश्वविद्यालय, ग्वालियर

संदर्भ :

(1) मुखर्जी, रविन्द्रनाथ, सामाजिक मनोविज्ञान, किताब महल, नई दिल्ली, 2000
(2) अग्रवाल. जी.के., सामाजिक मनोविज्ञन की रूपरेखा, साहित्य भवन, आगरा, 1979
(3) आहूजा, राम, भारत की सामाजिक समस्यायें रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2002
(4) त्रिपाठी, विनोद, असामान्य व्यवहार, वाणी प्रकाशन इलाहावाद, 2009